स्वस्थ्य की सुरक्षा - इसलामी शासन

भाषांतरः- ऐ ईमान लानेवालो! जो अच्छी-सुथरी चीज़ें हमने तुम्हे प्रदान की हैं उनमें से खाओ तथा अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाओ, यदि तुम उसी की बन्दगी करते हो।

(सुरह बक़रह 02:172)

इस आयत करीमा में अल्लाह तआला ईमान वालों से फरमाता है के ऐ इमान वालो! पवित्र व शुद्ध और अच्छी चीज़ें खाओ! जो हम ने तुम्हे दान की हैं तथा अल्लाह तआला का कृतज्ञता संपादन करो यदि तुम इसी कि इबादत करते हो।

इस धर्मोपर्देश से प्रकट होता है के पवित्र एवं अच्छी चीज़ें खाना चाहिए। ईमान जाति को इस बात की चेतावनी दी गई। जो लोग ईमान वाले नहीं उन के पास शुद्ध व अशुद्ध तथा हलाल व हराम में कोई अनुसार नहीं होता।

जो चीज़ भी उन के पास होती है वह लेते तथा उपयोग करते हैं। जो चाहते हैं खा लेते हैं, जिस मशरूब कि इच्छा होती है पी लेती हैं। इन्हें इस के अपवित्र व अशुद्ध होने कि चिन्ता होती है और ना नुकसानदह के समस्या होने का एहसास रहता है।

जबके अल्लाह तआ़ाला ने हलाल व हराम को स्पष्ट कर दिया है तथा खुल कर वर्णन फरमाया, फिर प्रतिरुप व नक़्ल से दूर रहने का आदेश दिया, इरशाद नबवी हैः-

भाषांतरः- हज़रत आ़मिर रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु से वर्णित है फरमाते हैः- मैं ने हज़रत नोअ़मान बिन बसीर रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु से सुना, इन्हों ने कहा, हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः हलाल स्पष्ट है तथा हराम स्पष्ट है तथा जो चीज़ें इन के बीच हैं वह मुसतबा चीज़ें हैं।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 52)

क़ुरान करीम तथा हदीस में जिन चीज़ों को खाने तथा पीने से मना किया गया इन के चंद दर्जे हैं- हराम, मकरुह तहरीमी, मकरुह तंज़ीही आदि।

तथा जिन चीज़ों से नहीं रोका गया वह भी चंद दर्जे रखते हैः हलाल, सुन्नत मुसतहब तथा मुबाह।

अल्लाह तआ़ाला बन्दों पर अत्यन्त महरबानी तथा बडा करम फरमाने वाले हैं। किसी चीज़ से मना फरमाया तो इस लिए के इस को खाने से मानव के ज़ाहिर व बातिन को हानिकारक होता है तथा खाने पीने कि आज्ञा दी तो इन भोजन से लाभ और फायदा मिलता है। अतेतः यह के हिकमत वाले पालनहार का कोई आदेश हिकमत से खाली नहीं होता।

अल्लाह तआ़ाला बन्दों को वही आदेश फरमाता है जिस का संमापन पर बन्दे क्षमता रखते हैं तथा जिस को मान्ने में इन के धार्मिक व दुनियवी लाभ

रहते हैं। अल्लाह तआ़ला का मंशा यह है के बन्दों को शारीरिक स्वस्थ तथा प्रकृति शक्ति प्रदान करें।

इसी लिए हलाल व पाक भोजन खाने तथा पीने का आदेश दिया, तथा अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के माध्यम के --- कारण इस प्रकार वर्णन फरमायाः-

भाषांतरः- ये नबी (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) इन के लाभ के लिए पवित्र चीजें हलाल करते हैं तथा इन्हें बुरी-अस्वच्छ व अपवित्र चीज़ों को हराम फरमाते हैं।

(सुरह अल आ़राफः 07:157)

स्पष्ट है के अच्छी तथा पवित्र चीज़ें स्वस्थ व शक्ति के संरक्षण हुआ करती हैं तथा बुरी व अपवित्र भोजन, शारीरिक फसाद तथा बीमारी व रोग का कारण बनती हैं।

स्वस्थ शारीरिक, अंग व भाग कि शक्ति व क्षमता तबीयत में ओज व चुस्ती तथा रोग से सलामती अवश्य अल्लाह तआ़ला कि एक विशाल दानशीलता है। इस वरदान व दानशीलता के बदले बन्दों पर अपने अल्लाह का धन्यवाद प्रदान करना अनिवार्य है।

उसी लिए अल्लाह तआ़ला ने पवित्र चीज़ों को खाने कि हिदायत देने के बाद धन्यवाद गुज़ारी का आदेश फरमाया, पवित्र तथा अशुद्ध भोजन के द्वारा अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें शारीरिक तथा स्वस्थ व सुरक्षा प्रदान फरमाई।

इस उदारता व दानशीलता पर तुम इस का धन्यवाद करो! धन्यावद संपादन करने कि मार्गदर्शन भी अल्लाह तआ़ला कि उदाहरता है।

जब धन्यवाद संपादन होगा तो अल्लाह तआ़ला इस पर भी उदारता कि वर्षा प्रवेश फरमाएगा जैसा के आदेश हैः-

भाषांतरः- यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें तथा और दूँगा।

(सुरह इ़ब्राहीमः 14:07)

स्वस्थ शरीर- अल्लाह का वरदान

स्वस्थ्य व तंदुरुस्ती अल्लाह तआ़ला कि दानशीलता वरदान है। इस कि सुरक्षा व शरण अत्यन्त अवश्य है कियों के स्वस्थ हो तो मानव हर नेक व भला कर्म तथा अल्लाह कि इ़बादत कर सकता है।

नमाज़ हो के रोज़ा, क़ुरान का अनुवाचन (तिलावत) हो के ज़िक्र व दुआएं, रोगी से मुलाकात, जनाज़े में भाग लेना, ग़रीबों व निर्धन को उपकार, पडोसियों कि मदद, अतेतः अल्लाह तआ़ला के अधिकार व इ़बादत के अधिकार को उच्च तौर पर तथा खूबी के साथ संपादन करना स्वस्थ पर निर्भर है।

स्वस्थ व सेहत कि महत्व व लाभ निम्लिखित इस हदीस से स्पष्ट होती हैः-

भाषांतरः- हज़रत इब्न अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने कहा सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः 2 वरदान ऐसी हैं के जिन से बहरूर रहने वाले कई लोग धोके में हैं वह हैः स्वस्थ्य तथा अवकाश (फुरसत)।

(सहीह बुखारी हदीस संख्याः 6412, सुनन अल तिरमीज़ी, हदीस संख्याः 2473)

परन्तु पछतावा के जब तक स्वस्थ सुरक्षित रहे मानव को इस कि महत्वता कि आशंका नहीं होती, फिर जब धीरे-धीरे स्वस्थ बिगडने लगती हैं तथा रोग का घटा प्रभावित करने लगती है तो इस समय समझ में आता है के मैं ने कैसे वरदान (नेअ़मत) को खो दिया।

इस कि उपलब्धता व प्राप्यता में ना अल्लाह को राज़ी कर सका ना इस के बन्दों के अधिकार संपादन कर सका।

अल्लामा इब्न जूज़ी फरमाते हैः-

भाषांतरः- सामान्य रुप से मानव स्वस्थ व निरोग रहता है परन्तु समाज कि चिन्ता के कारण से अवकाश व फुरसत के पल नहीं मिलते। तथा अकसर धनी होता है परन्तु स्वस्थ नहीं रहता, जब किसी को यह दोनों वरदान प्राप्त हों तो इस पर इलाही से उपेक्षा व आलस्य प्रभावित रहती है इस प्रकार वह धोके में पढ जाता है।

(फत्ह उल बारी, हदीस संख्याः 5933)

स्वस्थ व निरोग एक प्रकार कि सम्पत्ति

ग़रीब व दरिद्र मानव कि कामना रहती है के वह धनी व संपन्न हो जाएं। इस को भी धनवान के प्रकार कुशादगी व आशीर्वाद प्राप्त हो। धन व --- पाया जाना जिस प्रकार विपुल व सहायक का दर्जा रखता है।

इसी प्रकार शरीर कि भी बेनियाज़ी व धनवान होती है। शरीर कि बेनियाज़ी व मालदारी इस के स्वस्थ्य व तंदुरुस्ती तथा रोग से सुरक्षित है।

हज़रत अबु दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैः-

भाषांतरः- स्वस्थ्य व तंदुरुस्ती शरीर कि सम्पत्ति है।

(कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 44386, जामअ अल हादीस, हदीस संख्याः 41589)

यदि शरीर तंदुरुस्ती के साथ धन कि फराक़ी भी प्राप्त हो जाए तो मनुष्य 2 वरदान को प्राप्त करने वाला हो जाता है। जो सत्य में कई एक वरदान के बराबर है तथा यह अल्लाह के इनाम व दानशीलता से मिलता है।

दरिद्रता यदि ना हो सालिक
तंदुरुस्ती हज़ार नेअमत है।

इसलाम में स्वस्थ्य व तंदुरुस्ती के कई घटना व महत्वता होती है। हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आदेश हैः-

भाषांतरः- हज़रत उ़मर बिन मैमून औदी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसुल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को नसीहत करते हुए फरमायाः तुम पाँच चीज़ों को पाँच चीज़ों से पूर्व कृतज्ञता जानो। अपने जीवन को मृत्यु से पूर्व, फुरसत को व्यस्त रहने से पूर्व, तवंगिरी को दरिद्रता से पूर्व, यौवन को बूढापे से पूर्व तथा तंदुरुस्ती को बीमारी से पूर्व।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, हदीस संख्याः 34319)

इसलाम में स्वस्थ व तंदुरुस्त कि प्रतिष्ठा व महत्व इस से भी दीप्तिमान होती है के हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने स्वस्थ्य व अनुरुपता व शक्तिशाली मोमिन को कमज़ोर से बेहतर फरमाया, जैसा के आदेश मुबारक हैः-

भाषांतरः- शक्तिशाली मोमिन कमज़ोर मोमिन से बेहतर व श्रेष्टतर है तथा अल्लाह तआ़ला के पास अधिक प्रिय है।

(सहीह बुखारी, किताब उल खदर, हदीस संख्याः 6945)

क़ियामत के दिन- स्वस्थ्य के बारे में प्रश्न

स्वस्थ्य व अनुकूलता तथा तंदुरुस्ती कि महत्व व प्रतिष्ठा से कौन इन्कार कर सकता है अवश्य यह अल्लाह तआ़ला का ऐसा वरदान है के इस का सम्मान व आदर जान कर सुरक्षा व शरण का बेडा उठाना, इस को कृतज्ञता समज कर आज्ञापालन में लगे रहना तथा बुराइयों से दूर रहना अनिवार्य है।

क़यामत के दिन स्वस्थ्य व अनुकूलता के बारे में भी प्रश्न होगा के बन्दा इस से कया लाभ प्राप्त किया, किस प्रकार का आदर व सम्मान करना चाहिए, जैसा के आदेश नबवी हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है सैयदना रसुल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया क़यामत के दिन बन्दे से सब से प्रथम जिस चीज़ का हिसाब लिया जाएगा वह यह है के इस से कहा जाएगाः किया हम ने तेरे लिए तेरे शरीर को सेहतमंद नहीं रखा तथा तुझे ठण्डे पानी से प्रदान नहीं किया।

(अल मुसतदरक अ़ला सहिहैन, हदीस संख्याः 7310, शुअ़बुल इ़मान, हदीस संख्याः 4430)

स्वस्थ कि सुरक्षा के नियम

सेहत व अनुरुपता कि सुरक्षा करना भी मनुष्य पर अनिवार्य व अवश्य है। धर्मशास्त्र (शरीअ़त) ने सेहत के संरक्षण के चंद नियम व व्यवस्था तथा सिद्धांत वर्णन किए हैं। वर्तमान दौर में सेहत के संरक्षण के लिए बडे संघर्ष व कष्ट किए जा रहे हैं।

इस के लिए लोगो ने चंद नियम प्रयोग किए हैं। विश्व मंच पर इस को आगे बढाने के लिए संगठन व संस्थाएं कि जा रही है परन्तु इसके बावजूद परिणाम कुछ नहीं प्राप्त हो रहा है।

इस का कारण यह है के अल्लाह तआला के कानून व धर्म के नियम को फरामोश (कृतघ्न व अरुचिकर) किया जा रहा है। रोग को दूर करने तथा बीमारियों को रोकने के लिए जितनी अत्यधिक कोशिश की जाती है इस से कई दर्जे अधिक सेहत के संगठन व संस्थाएं के लिए --- कम्पनियों को रिवाज दिया जाता है।

अश्लीलत चलचित्र (सिनेमा) का उपयोग किया जाता है के पाश्चात्य संस्कृति व रस्म को परवान चढाया जाता है। जब तक इसलाम के दिए हुए निय व सिद्धांत को साधारण ना किया जाए सम्पूर्ण तौर पर किसी को स्वस्थ नहीं मिल सकती। यहाँ सुरक्षा सेहत के चंद निय क़ुरानी आयत तथा हदीस के आधार में वर्णन किए जाते हैः-

सेहत का प्रथम नियम- तंदुरुस्ती कि कामना

सेहत हो या रोग, लाभ हो या हानि हर विषय में प्रभावित अल्लाह तआला ही है तथा हर शई दान करने तथा इस को दफा करने पर वही पालनहार क्षमता रखता है।

इसी सेहत को प्राप्त करने के लिए इसी के दरबार में निवेदन व प्रार्थना करनी चाहिए। हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से सेहत व सुख, तंदुरुस्ती व सलामती मांगने का अनुदेश फरमाया।

अतेतः सुनन इब्न माजह में हदीस हैः-

भाषांतरः- अल्लाह तआ़ला से सुख माँगो, कियों के ईमान व विश्वास के बाद किसी व्यक्ति को सुख से श्रेष्टतर कोई वरदान नहीं दी गई।
(सुनन इ़ब्न माजह, हदीस संख्याः 3981)

हमारे पूर्वजों व बुज़ुर्गों का तरीक़ा यही रहा है वह आदरणीय लोग रातों तथा समृद्ध दिनों में सुःख व सेहत कि दुआएं करते थे। इसलिए सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा फरमाती हैः-

भाषांतरः- मुझे जब मालूम हो जाए के फलां रात शबे-खद्र है तो मैं इस रात अल्लाह तआ़ला से आफियत के सिवा कुछ ना माँगुगीं।

(मुसन्नफ इ़ब्न अबी शैबा, अंक 7, पः 26)

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः-

भाषांतरः- बन्दे ने आफियत से अधिक अल्लाह तआ़ला के पास प्रिय कोई और चीज़ नहीं मांगी।

(मुसन्नप इ़ब्न अबी शैबा, अंक 7, पः 26)

सेहत का रहना धन्यवाद का परिणाम

दुआ से जब सेहत मिल जाए तो इस को बाखी रखना तथा इस कि सुरक्षा कि चिन्ता करना, अवश्य है। सेहत व सुःख को बाखी रखने के लिए अल्लाह तआ़ला का धन्यवाद संपादन करना उच्च स्थान रखता है हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने कहाः

भाषांतरः- वरदान तथा दानशीलता पर धन्यवाद करते रहने को अनिवार्य कर लो कियों के ऐसा बहुत कम हुआ है के किसी जाति से वरदान चली जाए फिर इन्हें वापिस दी जाए।

(खौलुल खुलूब, अंक 1, पः 293)

सेहतमंदी में पापों से दूर रहना

धन व सम्पत्ति कि अधिकता व आज्ञापालन मनुष्य को अभिमानी व अहंकारी व स्वार्थी बनाती है तथा वह अवज्ञा व अवज्ञालंघन बन जाता है। --- अंदेशी में लोगों पर अत्याचार करता है। इसी प्रकार सेहत व स्वस्थ्य में भी इस से अवज्ञालंघन व पाप होने लगता है।

इस के हृदय व दिल पर आज्ञालंघन व अवज्ञा का मैल जम जाता है।

इसी कारण से स्वस्थ व सेहत के ज़माने में पापों से परहेज़ करना भी बढी सम्पत्ति है बल्कि सेहत एक वरदान है। अतः सेहतमंदी में अवज्ञालंघन से तथा --- से दूरी का मार्गदर्शन वरदान दर वरदान है।

विशाल सूफी बुज़ुर्ग हज़रत अबु तालिब मक्की रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्त 386 हिज्री) फरमाते हैः-

भाषांतरः- जाल लो के मानव धन के कारण जिस प्रकार अवज्ञा होता है सुःख व स्वस्थ कि बिना पर भी सरकश होता है कियों के जिस प्रकार धन से अभिमानी व अंहकारी (घमण्डी) होता है।

सेहत व स्वस्थ्य से भी होता है, इन सब परिस्थितियों में मानव के लिए फितना व परीक्षण है। स्वस्थ्य बजाए खूद वरदान है। इस स्थिति में बुराईयों से सुरक्षित रहना दूसरी वरदान है जिस प्रकार के धनी में पापों से बचना वरदान का वरदान है।

(खौतुल खुलूब, अंक 1, पः 407)

स्वस्थ शरीर के लिए कम भोजन चाहिए

शरीर के स्वस्थ तथा दिल कि सलामती दोनो का मदार कम खाने पर निर्भर है। धर्म के बुज़ुर्ग ने दो जहाँ में सलामती व रक्षा के लिए 3 नियम व शासन बनाए हैः-

(1)- कम क़फतन, यानी कम सोना।

(2)- कम गुफतन, यानी कम बोलना।

(3)- कम खुरदन, यानी कम खाना।

हज़रत सुफयानी सौरी रहमतुल्लाहि अलैह ने उसमान बिन ज़ाईद को लिखाः-

भाषांतरः- यदि आप शरीर का स्वस्थ्य तथा कम सोना चाहते हैं तो खाना कम करो।

(हुलियतुल औलाद, सुफयान सौरी, अंकः 3, पः 146)

हराम भोजन का उपयोग स्वस्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक

शारीरिक स्वस्थ प्राचीन काल तक इन्हीं लोगों कि स्थापित रहती है जो खाने, पीने कि अन्न में सावधानी करते हैं। अल्लाह तआ़ला ने जिन चीज़ों को हराम फरमाया इन कि ओर ना इन लोगों कि आँख उठती है, ना हाथ बढता है, ना दिल लचकता है।

वर्तमान ज़माना शराबनोशी (मदात्यय व अतिपानता), ब्याजखोरी, तथा सेहत में बिगाड जन्म लेने वाले अन्न का उपयोग बढाता जा रहा है जैसे सिगरेटनोशी (धुम्रपानडंडिका), गुटका आदि, जब तक के शरीर को कष्ट व नुकसान पहुंचाने वाली खराबियों का समाप्त ना किया जाए तथा इन हानिकारक अन्न व वस्तुओं का उपयोग से परहेज़ ना किया जाए सेहत व स्वस्थ्य बाखी नहीं रह सकती।

शराबनोशी व मदात्यय से दूर रहा जाए!

मानव उन्नति व प्रगति कि ओर बढ रहा है शराब को उच्च से उच्च बना रहा है। शराब के नाम बदल बदल कर इस को जाइज़ ठहराने कि अपवित्र व अशुद्ध कोशिश कर रहा है।

शराब थोडी हो या बहुत, इस का नशा कम हो या अधिक, तुरंत प्रभाव करे या विलम्ब से, हर स्थिति में शराब हराम है, नाम बदलने से कोई हराम वस्तु हलाल नहीं हो सकती।

सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः-

भाषांतरः- वह शय (वस्तु) जिस कि अधिक संख्या जब नशा जन्म ले तो इस कि थोडी संख्या भी हराम है।

(जामे तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 1985)

सभ्यता कि --- के लिए शराबनोशी तथा अन्य --- से सम्पूर्ण परहेज़ करना अवश्य है।

सिगरेटनोशी से परहेज़ किया जाए!

अल्लाह तआला ने मनुष्य को जीवन – बक़शी है, मानव ना अपने शरीर का मालिक है तथा ना इस को दी गई शक्ति का। यह अल्लाह तआला कि ओर से मनुष्य के पास रखी गई अमानतें हैं जो विशेष-विशेष उद्देश्य के लिए जन्म दी गई हैं।

इन शक्तियों को गलत स्थान पर उपयोग करना फितर के उद्देश्य तथा निर्माण के लक्ष्य के विरूद्ध है। हानिकारक व अपकारी वस्तुएं का उपयोग कर के इन शक्तियों को --- करना वास्तव में अल्लाह तआला के प्रदान अमान में खयानत करने के सक्षम है।

ऐसी ही हानिकारक वस्तुओं में एक सिगरेट (धुम्रपानडंडिका) धुम्रपान है। वैध व विद्वान (डाक्टर) कि अनुसंधान के अनुसार सिगरेट धुम्रपान से अनेक प्रकार के 99 रोग जन्म लेते हैं। इन में से चंद यह हैः-

मुंह का रोग, ज़बान का रोग, जबड़े का रोग, परिपाक (हाज़मे) का रोग, दमे (श्वास-रोग) का रोग, खून के दौरान का रोग, पेशाब का रोग।

पावन शरीअ़त तथा सिगरेट धुम्रपान

लगभग 150 सदी पूर्व जब सिगरेट का आविष्कार हुआ तो विद्वान व महाध्यापक ने इस कि अनुचिता के फतवे दिए।

संगठित विद्वान ने सिगरेट धुम्रपान कि अनुचिता (अनिष्ट) कि --- यह बताई के सिगरेट धुम्रपान से मनुष्य के शरीर बूढा व निर्बल हो जाता है। तथा स्वस्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है इसकी हानिकारक रसानी में कोई दूर आए नहीं।

सरकार दो अ़ालम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने हर नशे (उन्मत्तता) तथा हानिकारक भोजन के उपयोग व उपभोग से मना फरमायाः-

भाषांतरः- सरकार दो अ़ालम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने हर नशे तथा, शकु व भाग को कमज़ोर व निर्बल करने वाली वस्तुएं से मना फरमाया।

(सुनन अबु दाउद, हदीस संख्याः 3688- मुसनद अ़मद, हदीस संख्याः 27392)

हानिकारक चीज़ों के उपयोग से परहेज़

हानिकारक व क्षतिकर चीज़ें का उपयोग विनाश कि ओर ले जाता है तथा खूद को नाशन से बचाने का आदेश क़ुराक पाक में हैः-

भाषांतरः- अपने ही हाथों से अपने-आप को तबाही में ना डालो।

(सुरह बक़रहः 02:195)

यह आयत हर ऐसी चीज़ कि निषिद्ध पर सक्षेत करती है जो हानिकारक हो जैसे सिगरेट धुम्रपान आदि।

इ़माम नववी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः- हर वह वस्तु जिस को उपभोग करना नुकसान पहुंचाएं, वह हराम है जैसे कांच, पत्थर, ज़हर तथा जिस को खाने में कोई हानि ना हों, हलाल है किन्तु गंदगी व अशुद्धा वाली वस्तुएं खाना हराम है।

असिद्ध व अशुद्ध चीज़ें खाने से परहेज़

इसलाम धर्म ने मुसलमानों को अच्छी तथा पवित्र चीज़ें खाने का आदेश दिया, बुरी व अशुद्ध, अपवित्र वस्तुओं से दुर रहने का आनुदेश फरमाया। अशुद्ध यानी वह चीज़ है जिस कि बो तथा स्वाद स्वस्थ पर घृणास्पद (घृणित व घृणा योग्य) हो, तथा मनुष्य इस से अनुचित व अनिष्ट हो, सिगरेट का धुआं, इस का स्वाद तथा बो सिगरेट उपयोग करने वालों के सिवा सब पर घृणास्पद गुज़रती हैं।

अशुद्ध व अपवित्र, अच्छी तथा बुरी चीज़ें बराबर नहीं हो सकती तथा इन पर एक ही प्रकार का आदेश नहीं लगाया जा सकता, जैसा के अल्लाह तआला ने आदेश फरमायाः-

भाषांतरः- आप फरमा दीजिएः "बुरी चीज़ तथा अच्छी चीज़ समान नहीं होती, चाहे बुरी चीज़ों की बहुतायत तुम्हें प्रिय ही क्यों ना लगे"।

(सुरह अल माइदाः 05:100)

भाषांतरः- ऐ लोगो! धरती में जो हलाल तथा अच्छी-सुथरी चीज़ें हैं उन्हें खाओ तथा शैतान के पदचिन्हों पर ना चलो।

(सुरह अल बक़राः 02:168)

अंत में निवेदन है के किसी कम्पनी (संगति) कि उत्पादन उपज पर यह लिखा हो को यह चीज़ खाने या पीने से स्वस्थ्य के लिए हानिकारक है तो कया कोई इस को खरीद कर खाना या पीना पसंद करेगा?

यहाँ बुद्धिमान मनुष्य का उत्तर यही होगी के "नहीं", फिर कया कारण है के सिगरेट पैक पर यह (Cigarette smoking is injurious to health) (भाषांतरः- सिगरेट धुम्रपान स्वास्थ्य के लिए क्षतिकर व हानिकार है) लिखा हुआ होने के बावजूद लोग बडे उत्साह व शौक़ से पीते हैं?

इसलाम धर्म में रीति-रिवाज के बजाए उद्देश्य व लक्ष्य को अधिमान रखा गया है। स्वस्थ्य व तंदुरुस्ती कि महत्वपूर्ण के पेश नज़र विश्व रचना कि ओर से 1950 से "विश्व स्वस्थ्य दिवस" मनाया जाने लगा है जबके हज़रत

नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लगभग 1400 सदियों पूर्व ऐसी शिक्षण व अध्यापन दान कर चुके जो मानवजाति स्वस्थ कि संरक्षक हैं।

तहारत के नियम, वुज़ू (प्रक्षालन), स्नान व इस्तेंजा, खाने पीने के शिष्टाचार व सुनन, नमाज़ व रोज़े के सिद्धांत तथा इस जैसे बहुत सारे मार्गदर्शी हैं जिन पर पाबन्दी के साथ कर्म करने से शरीर पवित्र व शुद्ध रहता है।

इन मार्गदर्शी को स्थायी रुप से कार्यन्वय से लागू तकने में रखा जाए तो वातावरण कि सफाई व निपुणता, शरीर, वस्त्र तथा तहारत का स्थान व पवित्रता के कारण रोग --- होने कि आशंका बहुत कम होते हैं।

अर्थात यह लाभदायक व हितकारी शिक्षा मानव के शरीर के लिए स्वस्थ्य प्रमाणपत्र (Health certificate) हैं।

इसलामी शरीअत में बहुत से कर्म जो केवल इसलामी सिद्धांत तथा --- कार्य होने के बावजूद मनुष्य के समाज व सोसाइटी के लिए राहत का माध्यम भी है तथा बजाए खूद रोग व बीमारियों से बचने कि सावदानी पद्यतियां तथा रोग के कारण को समाप्त करने कि स्थिति हैं।

यदि हज़रत नबी आकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि प्रादर्शी (बतलाई) हुई इन ---, लाभदायक व हितकारी व स्वस्थ्य शिक्षा व अध्यापन पर कार्यान्वयन हो जाएं तो मानवीय वातारण से रोग व बीमारियाँ जन्म होने कि आशंका व अंदेशा कम हो जाते हैं।

अंत में प्रार्थना है के अल्लाह तआला हम सब को शारीरिक व भावपूर्ण स्वस्थ्य अनुकूलता प्रदान करे तथा हर प्रकार के रोग से सम्पूर्ण उपचार व शिपा दान फरमाएं।

आमीन...